भारत अध्ययन केन्द्र

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

त्रिदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी सह परिसंवाद

भारतीय लोकज्ञान

पुनर्नवता एवं पुनःप्रयोग

8-10 अप्रैल 2019

महामना सभागार, मालवीय मूल्य अनुशीलन केन्द्र, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

सहयोग गलगोटिया शैक्षणिक संस्थान । अयोध्या शोध संस्थान, अयोध्या

संरक्षक
प्रो. राकेश भटनागर
कुलपति, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

संगोष्ठी निदेशक
प्रो. कमलेश दत्त त्रिपाठी
सेन्टेनरी चेयर प्रोफेसर, भारत अध्ययन केन्द्र
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

संयोजिका
प्रो. (श्रीमती) मालिनी अवस्थी
सेन्टेनरी चेयर प्रोफेसर, भारत अध्ययन केन्द्र
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

आयोजन सचिव
डॉ. अमित कुमार पाण्डेय
सेन्टेनरी विज़िटिंग फ़ेलो, भारत अध्ययन केन्द्र
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

समन्वयक
प्रो. सदाशिव कुमार द्विवेदी
समन्वयक, भारत अध्ययन केन्द्र
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

सम्पर्क डॉ. अमित कुमार पाण्डेय 9454737596 • श्री विश्वमौलि 9450209580

भारत अध्ययन केन्द्र
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

त्रिदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी सह परिसंवाद

भारतीय लोकज्ञान
पुनर्नवता एवं पुनःप्रयोग

भारतीय ज्ञान परम्परा लोक और वेद इन दो धाराओं में सहसाब्दियों से प्रवाहित होती रही है। वेद और शास्त्र उस परम्परा की निरन्तरता और स्थिरता पर बल देते रहे हैं, लेकिन लोक उसमें प्रयोग और परम्परा के पुनर्नवीकरण की धारा को अजस्र रूप में प्रवाहित करता रहा है। दूसरे शब्दों में जहाँ शास्त्रज्ञान कला की परम्पराओं को स्थिर रखने के लिए उसे बाँधने का प्रयत्न करता है वहीं लोकज्ञान उस बन्ध को तोड़ता हुआ उसे सतत् आगे ले जाने की चेष्टा करता है। यह उल्लेखनीय है कि प्राचीन भारतीय व्याकरण की परम्परा में और इसी प्रकार साहित्य और कला की परम्परा में लोक को सर्वप्रथम अभिहित किया गया है तथा वेद एवं शास्त्र जैसे अन्य स्थिरता के कारकों को उसके बाद उपदर्शित किया गया है। यह भी उल्लेखनीय है कि वेद और शास्त्र तथा लोक का सम्बन्ध, दो प्रतिस्पर्धी और आज की भाषा में द्वन्द्वात्मक कम, अपितु परस्पर अनुपूरकता का सम्बन्ध अधिक लक्षित किया जा सकता है। इसीलिए समूची ज्ञान परम्परा न तो लोकाश्रयता से हट सकती है और न ही शास्त्र का अन्ध विरोध कर सकती है। ऐसे में यह कहा जा सकता है कि लोक और शास्त्र का सम्बन्ध 'युग्म' का है।

लोक शब्द में समाहित भारतीय दृष्टि बहुत व्यापक और विविधवर्णी है। वह जीवन जगत की चाक्षुष वास्तविकता से लेकर व्यवहार की सहज पद्धति तक है जिसे अनेक सदियों में भारतीय समाज ने विकसित किया है उसमें लोक आस्था, लोकमूल्य, लोकधर्म, लोकविश्वास, लोकदेवता, लोक अनुष्ठान, लोकभाषाएँ, लोकसाहित्य, लोककलाएँ, लोककौशल और शिल्प परम्पराएँ विकसित हुई हैं। इस पूरी परम्परा का आधार जीवन की वास्तविक शिक्षा है। जीवन की पाठशाला में जीवन के ज्ञान, रचना और विमर्श के पीछे हजारों पीढ़ियों का ज्ञान संरक्षित है। वह प्रत्येक पीढ़ी तक आता है उसके उत्तराधिकार की तरह और फिर प्रत्येक पीढ़ी जीवन के अपने अनुमान और अनुभूति को एक नवाचार के साथ उसमें जोड़ती हुई विरासत को अधिक समृद्ध, जीवन्त और प्रासंगिक बनाती चलती है। यही लोक की जीवन परम्परा है। इसमें जीवन के ज्ञान और मनुष्य की रचनाधर्मिता से जीवन का संस्कृतिकरण होता है। भारतीय लोकज्ञान परम्परा अपनी विशदता, समृद्धि एवं प्राचीनता के ही कारण हजार वर्षों की यात्रा के बाद भी लोकजन में व्याप्त है। लोक का सबसे लाक्षणिक अर्थ होगा कि लोक में जीवन चर्चा, जिसमें जीवन का सिखाया ज्ञान, जीवन और प्रकृति के सान्निध्य में सीखी और रची गई संस्कृति और इसी संस्कृति धारा में जीते, रचे गए साहित्य और कला रूप शामिल हैं। एक अर्थ में यह लोकज्ञान परम्परा, संस्कृति, जीवन की धन्यता, जीवन का उल्लास, जीवन की जय एवं आनन्द का मंगलगान है।

लोक दरअसल पूरे समाज की भाषा है तथा शास्त्र उसी का व्याकरणिक पक्ष होता है। हमें लोक को शास्त्र के अनुभव के स्तर पर जीना चाहिए। यह अनुभव लोक की उपलब्धियों जैसे– लोकवार्ता, लोककाव्य, लोककला ही नहीं बल्कि शास्त्र के निहितार्थों तक पहुँच कर ही हो सकता है। इस अनुभव के साथ विस्तार का प्रयत्न वस्तुतः भारतीय चिन्तन परम्परा को प्रकट करने में सहायक होता है, और इसको पुष्ट और प्रमाणित करता है। ज्ञान में नए आविष्करण के लिए और सर्जन शीलता में नए प्रयोग को अग्रभूमि में रखने के लिए, लोक और शास्त्र के इस सम्बन्ध की तथा उसके विविध पक्षों की निरन्तर परीक्षा किया जाना अति आवश्यक है। आज के सन्दर्भ में परम्परा और उसके पुनर्नवीकरण का तथा प्रयोग और पुनःप्रयोग की प्रवृत्ति का पोषण बहुत महत्त्व का होगा।

भारत अध्ययन केन्द्र, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी द्वारा उपर्युक्त वक्तव्य के आलोक में भारतीय लोकज्ञान परम्परा की समकालीन सन्दर्भों में नई और अन्तर्वैषयिक व्याख्या हेतु यह त्रिदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित है।

प्रस्तावित अकादमिक सत्र

सोमवार, 08 अप्रैल, 2019

उद्घाटन सत्र
10:00–11:00 बजे
- **'भारतीय लोकज्ञान : पुनर्नवता एवं पुनःप्रयोग'**

मुख्य अतिथि : प्रो. राकेश भटनागर
कुलपति, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी
विशिष्ट अतिथि : डॉ. कपिल तिवारी
विशिष्ट अतिथि : डॉ. शेखर सेन
अध्यक्ष : प्रो. कमलेशदत्त त्रिपाठी
विषय स्थापना एवं सत्र संयोजन :
प्रो. (श्रीमती) मालिनी अवस्थी

प्रथम सत्र (एकल व्याख्यान)
11:00–11:40 बजे
- **लोक और वेद**

प्रो. कमलेशदत्त त्रिपाठी
11:40–12:40 बजे
- **धर्म : लोक के आलोक में**

डॉ. शेखर सेन
01:00–01:30 बजे **भोजनावकाश**
द्वितीय सत्र
01:45–03:45 बजे
- **लोकनीति एवं आचार व्यवस्था : भारतीय ज्ञानपरम्परा के प्रस्थान बिन्दु**

डॉ. विद्याबिन्दु सिंह/ धर्मेन्द्र पारे / डॉ. कपिल तिवारी
प्रो. सदाशिव कुमार द्विवेदी
सत्र संयोजन : श्री यतीन्द्र मिश्र

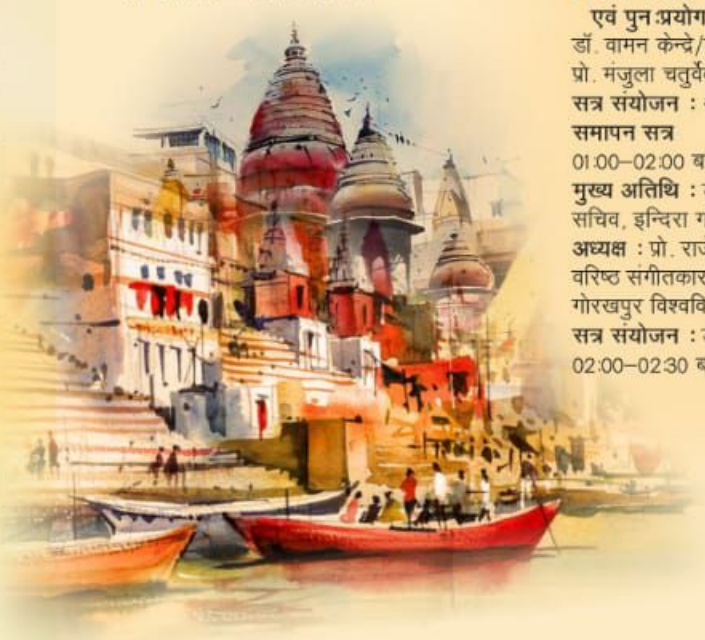

मंगलवार, 09 अप्रैल, 2019

तृतीय सत्र
10:00–11:30 बजे
- **भारतीय खानपान : स्वास्थ्य एवं संस्कृति के आईने में**

प्रो. पुष्पेश पन्त/प्रो. राजा वशिष्ठ त्रिपाठी/
प्रो. अन्नपूर्णा शुक्ला
- **भारतीय लोकज्ञान : कालगणना, विज्ञान एवं गणित के सन्दर्भ में**

11:45–12:45 बजे
प्रो. रामचन्द्र पाण्डेय/प्रो. विनय पाण्डेय/
डॉ. शत्रुघ्न त्रिपाठी/डॉ. मुकुटमणि त्रिपाठी
01:00–01:30 बजे **भोजनावकाश**
चतुर्थ सत्र
1:45–03:45 बजे
- **देशज चिकित्सा पद्धति : घरेलू इलाज/नुस्खे : कल आज और कल**

प्रो. वी.के. जोशी/डॉ. आकाश चन्द्र त्रिपाठी
सत्र संयोजन : श्री राहुल चौधरी

बुधवार, 10 अप्रैल, 2019

पंचम सत्र
10:00–11:30 बजे
- **भारतीय कृषि सम्बन्धी लोकज्ञान**

डॉ. मालविका ददलानी/डॉ. रामकृपाल पाठक
षष्ठ सत्र
11:40–01:00 बजे
- **लोककलाएँ : भारतीय सर्जनात्मकता का पुनर्नवीकरण एवं पुनःप्रयोग**

डॉ. वामन केन्द्रे/डॉ. लीलाधर मण्डलोई
प्रो. मंजुला चतुर्वेदी/प्रो. (श्रीमती) मालिनी अवस्थी
सत्र संयोजन : श्री राहुल चौधरी
समापन सत्र
01:00–02:00 बजे
मुख्य अतिथि : डॉ. सच्चिदानन्द जोशी
सचिव, इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, नई दिल्ली
अध्यक्ष : प्रो. राजेश्वर आचार्य
वरिष्ठ संगीतकार एवं पूर्व विभागाध्यक्ष, संगीत विभाग,
गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर
सत्र संयोजन : डॉ. अमित कुमार पाण्डेय
02:00–02:30 बजे **भोजन**